

## संसाधनों का वसितार, परंतु रोज़गार नहीं

### चर्चा में क्यों?

मानवीय इतिहास अभी तक के सबसे अधिक परिवर्तनकारी युग के बीच में है, जहाँ तकनीकी उन्नतिके माध्यम से असीम भोजन, पानी और ऊर्जा से भरपूर दुनिया को संभव बनाया जा सकता है। हालाँकि, इसमें कोई दोराय नहीं है कि मानव किसी भी गति अथवा मात्रा में किसी भी संसाधन का सृजन करने की क्षमता विकसित कर चुका है, तथापि कृत्रिम बुद्धि एवं रोबोटिक्स जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के आगमन के कारण मानव पूंजी की आवश्यकता में नरितर गरिब की दरज़ की जा रही है। मानव ने प्रौद्योगिकी के बल पर विकास तो किया है, लेकिन विकास की इस राह में मानव पूंजी का महत्त्व कम हो गया है।

- जहाँ एक ओर बेरोज़गारी की दर में नरितर वृद्धि हो रही है, वहीं दूसरी ओर मानव समाज संसाधनों को अर्जति करने की राह में और अधिक सक्षम होता जा रहा है।
- इस वसिगता का भवष्य पर क्या असर होगा, यह एक वचारणीय प्रश्न है।

### वर्तमान की स्थिति क्या है?

- गौरतलब है कि दुनिया की शीर्ष सात सबसे मूल्यवान कंपनियों में शामिल पाँच उच्च-प्रौद्योगिकी कंपनियों का संघी बाज़ारी पूंजीकरण लगभग 3 खरब डॉलर का है। तथापि, इन पाँचों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या मात्र 700,000 ही है।
- यह एक वसिगता ही है कि इतनी अधिक लागत वाली कंपनियों द्वारा मात्र 700,000 लोगों को ही रोज़गार प्रदान किया गया है।
- समस्या केवल इतनी ही नहीं है, इसके इतर समस्या यह है कि अपरिहार्य रूप से व्यापक स्तर पर अगली पीढ़ी द्वारा तकनीकों को अपनाए जाने से बड़े पैमाने पर बेरोज़गारी उत्पन्न होगी।
- वर्तमान समय की प्राथमिक चुनौती मज़दूरी अर्जति करने में सक्षम अवसरों में कमी के साथ-साथ बढ़ती आबादी के बीच प्रचुर मात्रा में उत्पादित संसाधनों का इष्टतम आवंटन करने की है।
- इन सभी प्रवृत्तियों को मद्देनज़र रखते हुए यूरोप में कई प्रगतशील राजनीतिक संगठनों द्वारा वेतन में कटौती किये बनि काम के घंटों में कमी करने, तीन दविसीय सप्ताहांत प्रदान करने तथा एक सार्वभौमिक मूल आय की शुरुआत करने के संबंध में कानून बनाए जाने की मांग की जा रही है।
- यदि काम के घंटों में कमी, साझाकरण एवं काम के प्रसार तथा पूरक आय के प्रावधान के तहत नए मॉडलों को तैयार किया जाता है, तो इससे अमीर देशों में (इनकी स्थिति तथा वृद्धि होती जनसंख्या जनिमें से अधिकतर औपचारिक अर्थव्यवस्था से संबद्ध हैं) जीवन के उच्च स्तर के साथ-साथ रोज़गार की उच्च संभावनाओं को आसानी से बनाए रखा जा सकता है।

### भारतीय परिदृश्य में वचार करें तो

- हालाँकि, यदि उक्त संदर्भ में भारतीय परिदृश्य में वचार करें तो हम पाएंगे कि भारत जैसे देशों के संबंध में यह पूर्णतया अव्यावहारिक परकिल्पना है। रोज़गार के संदर्भ में भारतीय परिदृश्य पहले से ही असंतुलन की स्थिति में है।
- श्रम ब्यूरो द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार, वर्ष 2015 में भारत के आठ श्रमिक क्षेत्रों में केवल 1.35 लाख नौकरियों का सृजन हुआ, जो कि रोज़गार के क्षेत्र में प्रवेश करने वाली सालाना लगभग 1.5 करोड़ जनसंख्या की तुलना में बहुत कम है।
- हालाँकि, भारत में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में संलग्नता कर्मचारियों की संख्या 90% से भी अधिक है।
- वस्तुतः अनौपचारिक क्षेत्र में ढाँचागत परिवर्तनों के माध्यम से इन क्षेत्रों के तहत आधुनिक उपकरणों एवं सर्वोत्तम अभ्यासों को अपनाने हेतु प्रोत्साहति करके तथा व्यावसायिक वसितार के लिये पूंजी तक पर्याप्त पहुँच सुनिश्चित करके अर्थव्यवस्था में विकास के साथ-साथ रोज़गार बाज़ार को प्रोत्साहति किया जा सकता है।
- भारत में बड़े पैमाने पर बुनियादी ढाँचागत क्षमता को विकसित किये जाने की आवश्यकता है। इसके लिये पूर्ण रूप से केंद्रित सरकारी योजनाओं और व्यवस्थित व्यय के प्रयोग द्वारा एक ऐसा माहौल बनाए जाने की आवश्यकता है जिसके अंतर्गत संभावति बड़े स्तर की परियोजनाओं में नज़ी नविश को प्रोत्साहति किया जा सके।
- जहाँ एक ओर इसके माध्यम से अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जा सकेगा वहीं दूसरी ओर नरिमाण क्षेत्र जैसे (भारत का दूसरा सबसे बड़ा नयिकता, यह अकेला क्षेत्र देश में तकरीबन 44 मिलियन रोज़गार के अवसरों का सृजन करता है) विकल्पों में अधिक-से-अधिक रोज़गार के अवसरों का सृजन किया जा सकेगा।

### नष्कर्ष

नष्कर्ष रूप में बात करें तो प्रौद्योगिकियों के विकास के साथ-साथ नीतितगत पक्ष में भी विकास किये जाने की आवश्यकता है। स्पष्ट रूप से यदि भारत अनविार्य

एवं स्थायी परसिंपत्तियों के नरिमाण की दशिा में अधकि बल और प्रभावी परणाम प्राप्त करना चाहता है तो इसे रोज़गार गारंटी योजनाओं जैसे मनरेगा, के प्रभावी ढंग से रोज़गार के अवसर सृजति करने वाले वकिल्पो के संदर्भ में वचिार करना चाहयि । हालाँकि, इसके लयि मौजूदा आर्थकि नयिोजन के साथ-साथ रोज़गार एवं संसाधनों के आवंटन संबंधी मॉडलों को फरि से परभाषति कयिा जाना चाहयि, ताकि उन्हें बदलते प्रौद्योगकि-त्वरति समय के साथ सही रूप एवं गति से समन्वयति कयिा जा सके । वस्तुतः यह केवल नीतगित ज़रूरत नहीं है, बल्कि यह बदलते समय की भी आवश्यकता है ।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/resources-aplenty-no-jobs>

